

पद १५०

(रागः यमन - तालः ध्रुपद)

पंचभूत त्रिगुण भाव सब मिल होत आठ, ज्या सो भयो जगत
जाल जनन मरण मौंच बंध ॥ध्रु.॥ त्रिविध धाम तनुतेज लिख
ज्ञानघन चिन्मार्तांड आपनो रूप आनंद नंद कंद ॥१॥